Academic Voices
A Multidisciplinary Journal
Volume 9, No. 1, 2019
ISSN: 2091-1106

नरेन्द्र कोहली के साहित्य में 'समष्टि परिवार' एक दृष्टिकोण

गीता कुमारी एन
हिन्दी विभाग, त्रि वि, ठाकुरराम बहुमुखी क्याम्पस, वीरगञ्ज, नेपाल

सार

प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए हैं। प्रत्येक काल में समाज अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, धार्मिक परिस्थितियों को उजागर करता है। समाज का स्वरूप इसी पर आधारित है। आज की प्रस्तुत समस्या व्यष्टिवादिता है। अहं ने मनुष्यको "मैं" में जीना सिखा दिखा दिया है। परिवार विघटित होता नजर आ रहा है। पारिवारिक विघटन को रोकने का नरेन्द्र कोहली अपने साहित्य में सतत प्रयास करते है। वह अपनी उपन्यास, कहानी तथा व्यंग्य रचनाओं मे परिवार को एक नया आयाम देते है, जो आगे आनेवाली पीढियों के मार्ग को प्रशस्त करती है एवम् जीवन जीने के तरीके को एक नया स्वरूप प्रदान करती है।

मुख्य शब्दहरु :

अभिरुचि; पारदर्शी; कर्त्तव्यनिष्ठ; पलायन; समष्टि; वंचित; निरूपण

परिचय

नरेन्द्र कोहली हिन्दी साहित्य जगत के एक सफल उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार एवं व्यंग्यकार हैं। साहित्यिक अभिरुचि उनके पिता की देन है। आप एक कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। आपकी कर्मठता आपके साहित्य में देखा जा सकता है। आप एक पारदर्शी साहित्यकार हैं। आपकी ईमानदारी आपके साहित्य मे साफ झलकती है। आपने समाज के प्रत्येक पहलुओं को उजागर किया है, कोई भी पक्ष अछूता नही रहा है। आपके साहित्य की गूँज बडे ही बेग से गुजायमान होती है। आपको अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत तथा सम्मानित भी किया गया है। नरेन्द्र कोहली के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है कि "इतना सहज भाव और ऐसी भेदक दृष्टि कदाचित ही देखने को मिलती है (कोहली, २०००, पृष्ठ ६३, ६४)।"

सामाजिक चेतना की मूल प्रकृति उसकी समष्टिवाद है। यह सम्पूर्ण जगत को एकत्र करने

मे निरत रहती है। इसके अन्तरगत एक व्यक्ति की अपेक्षा समग्र समाजको एक इकाई के रूप मे देखा जाता है। व्यक्ति के विकास से ही सामाजिक विकास संभव है। संसार मे जब जब सामाजिक चेतना जड पकडती है तब तब समाज सुधार की भावना बल पकडती है। सामाजिक चेतना ही समाज को सक्रिय वा क्रान्तिकारी बनाती है। व्यक्तिको समाज से जोडनेवाली कडी सामाजिक चेतना ही है। चेतना वह शक्ति है जो समाज को जीवन्त बनाए रखती है। किसी भी व्यक्ति, समाज परिवार और राष्ट्र की जीवन्तता का प्रमाण उसकी चेतना ही है। "हिन्दी शब्द सागर" ग्रन्थ के खण्ड ७ के पृष्ठ ३४५७ में समाज की परिभाषा इस प्रकार से दी गयी है - "समाज सं.पुं (सं) (१) समूह, संघ, दल, (२) सभा, (३) एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले लोग जो आपस में मिलकर एक अलग समूह बनाते हैं (दास, १९७३, पृष्ठ ३४५७)।"

यह संसार सुख और दुखों से निर्मित है। सुख और दुख से कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं हो सकता है। बडे से बडे ज्ञानी और सूक्ष्मदर्शी पारदर्शी व्यक्ति को भी यह ग्रस लेती है। इसी संदर्भ को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास महासमर "बन्धन" मे देवव्रत के माध्यम से चित्रित करते हैं – "मनुष्य कोई भी क्यो न हो, बलवान, ज्ञानी, चक्रवर्ती...आखिर मनुष्य है। शरीर और मन के नियमों का दास संसार के सुख-दुख से मुक्ति नहीं है उसकी (कोहली, २०००, पृष्ठ ११)।"

इस प्रकार समाज अनेकानेक बंधनो से युक्त है। यह बन्धन ही मनुष्य के मन में चेतना उत्पन्न करती है। मनुष्य समाज, परिवार, राष्ट्र व देश के अनेक युग्म से ही निर्मित है। समाज में परिवार का स्थान सर्वोच्च माना गया है। परिवार ही समस्त विश्व में एकरूपता लाने मे अपना अनुपम योगदान देते हैं। आज भले ही विश्व भर में अनेकार्थक संस्कृतियाँ पाई जाती हैं, परन्तु रिश्तों, नातों को लेकर वह एकाकार रूप ही ग्रहण करती है। नये रिश्तों का तादात्म्य के कारण पुराने रिश्तों का टूटना या दूरगामी बनना स्वभाविक है। अनेक लोगों की मान्यता यह है कि रिश्तो का सम्बन्ध केवल रक्त से सम्बन्धित होने पर ही होता है। परन्तु आज के आधुनिक परिवेश में सम्बन्धों की चर्चा मे टकराव सा आ गया है। रक्त से सम्बन्धित व्यक्ति एक दूसरे के जानी दुश्मन बन जाता है। भाई भाई का दुश्मन बन जाता है। आज की स्थिति यह है कि बाहरी व्यक्ति घरेलु बन जाता है और घरेलु व्यक्ति बाहरी। इसी तथ्य को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास महासमर "अधिकार" में भीष्म पात्र के जरिए प्रस्तुत करते हैं। धृतराष्ट्र और दुर्योधन जो पाण्डवों के अपने सगे सम्बन्धी हैं, उन्ही को वह अपना सर्वश्रेष्ठ दुश्मन समझता है। उनके विरुद्ध आवाज उठाने के लिए वह दूसरों की मदद करता है। "वह अपने भाईयों के विरुद्ध, बाहरी शत्रुओं की सहायता कर रहा है, वह शत्रुता को उत्प्रेरित कर रहा है (कोहली, २०००, पृष्ठ २७)।"

रिश्तों का बनना बिगडना व्यक्ति के अपने हाथ में है। वह अपने ही सगे सम्बन्धियों से ईर्ष्या करने लगता है और दूसरो से प्रेम। इससे यह बात जाहिर होती है कि आज रिश्ते नाते रक्त से सम्बन्धित नहीं रह गये हैं। प्रेमपरक आत्मीयता ही व्यक्ति को निकट ले आती है। पारिवारिक रिश्तों को जोडने के लिए तथा आत्मीयता की पहचान को दर्शाने के लिए अपने उपन्यास "अभिज्ञान" में बाबा को रिश्तों की आत्मीयता की बात करते हुए सुशीला कहती है – "रिश्ते केवल रक्त सम्बन्ध से ही तो नहीं होते। वे तो आत्मीयता से होते हैं (कोहली, १९८१, पृष्ठ ३५)।"

समाज को सुगठित रूप से चलाने के लिए स्वस्थ समाज का निरूपण करना अति आवश्यक है। स्वस्थ समाज और देश के लिए सुखमय परिवार का होना नितान्त आवश्यक है। इसी सन्दर्भ को

नरेन्द्र कोहली अपने समग्र व्यंग्य "रामलुभाया कहता है" के "न्याय अन्याय" में मिस दामिनी को सुखी परिवार और समाज को परिभाषित करते हुए बसंती कहती है – "सुखी परिवार के बिना न समाज बनता है, न सम्पन्न देश (कोहली, १९९८, पृष्ठ ३४०) ।"

आज मनुष्य अपने कर्तव्यों से पलायन करता हुआ नजर आ रहा है । मनुष्य अर्थ के पीछे अपना मान, ईमान, नाते, रिश्ते सभी को ठुकरा दिया है । समिष्ट परिवार हो या व्यष्टि परिवार दोनों में अर्थ का महत्व ही प्रमुख भूमिका निभाती है । इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास "तोडो कारा तोडो" मे सुरेन्द्र राम को आजकल के पारिवारिक सम्बन्धों में चले आये अर्थ के महत्व को बतलाते हुए कहते है- "सम्बन्धों में रुपया पैसा बहुत महत्वपूर्ण है भाई । कहते हैं न कि धनी सम्बन्धी, निर्धन सम्बन्धी को पहचानता ही नहीं (कोहली, १९९२, पृष्ठ ७८) ।"

आज परिवार धन लोलुपता के कारण टूटते नजर आ रहे हैं । संसार के सभी मनुष्य जाति को प्रण लेना चाहिए कि वे अपने परिवार को टूटने से बचाए । एक दूसरे के हितैषी बने । दुश्मनी इन्सान के कदमों को पथभ्रष्ट करती है । परिवार में प्रेम के उत्स को जगाना ही पडेगा । क्योंकि हम आज समाज मे देख रहे हैं कि भावी पीढी पथभ्रष्ट हो जीवन के अंधेरे गर्त मे डूबती नजर आ रही है । उनके उज्वल भविष्य के निर्माण के लिए घर के मुखिया को कडा कदम उठाना ही पडेगा । अपने परिवार को संजोकर रखिए, तभी हमारा देश बढते कदमों के साथ आगे बढ पाएगा ।

समष्टि परिवार

समष्टि परिवार हमारी अमूल्य संस्कृति का प्रतीक है । इसमें एक दूसरे के प्रति करुणा और भाईचारे की भावना पनपती है । बेसाहारों को सहारा मिल जाता है । विधवाओ के लिए, अनाथ बालको के लिए पारिवारिक साया मिल जाता है । बच्चे बुजुर्गो के संस्कार के अन्दर पलने के कारण उनमें अच्छे संस्कारो की वृद्धि होती है । परन्तु कुछ लोग स्वार्थी बन अपने फायदे की बात भी सोचने लगते हैं, जिससे एक दूसरे के मन में अलगाव की भावना पनपने लगती है । समष्टि परिवार मे भले लोगों को सब ठगते रहते हैं । इस प्रकार के स्वार्थीपन की भावना ही समष्टि परिवार को तोडने में सफल सिद्ध हुई है । इस प्रकार का परि दृश्य नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास "तोडो कारा तोडो" में विश्वनाथ के जरिय दर्शाते हैं । विश्वनाथ अपने पारिवारिक कलह और टूटन के बारे चिन्तन करते हैं – "दादा के असामयिक और आकस्मिक निधन के कारण, पिता सर्वथा असहाय हो गए थे, उनके तरुण होने तक दादी को कितने ही लोगों ने ठगा था ।..स्वयम् उनके अपने पुत्र और दामाद ने (कोहली, १९९२, पृष्ठ ११) ।"

"समष्टि परिवार" विधवाओं के लिए वरदान

विधवाओं के लिए समष्टि परिवार अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होता है । उन बेसाहारों के लिए यह सहारा प्रदान करता है । आर्थिक रूप से भी उन्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं होती है । घर के बुजुर्ग उनका ख्याल ज्यादा ही करते हैं । परन्तु वे कुण्ठाग्रस्त होकर सभी लोगों पर अपना आधिपत्य जमाना चाहती है । विधवाओं की समस्याओं को एक हद तक सुलझाने के लिए समष्टि परिवार एक सफल योगदान देता है । इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास "तोडो कारा तोडो" मे विश्वनाथ के माध्यम से उसकी बुआ के बारे मे प्रस्तुत व्याख्या से सिद्ध करते हैं –"ये बुआ विधवा होकर, इस घर में आधिपत्य जमाकर बैठ गई थी, और तब से आज तक यहीं है (कोहली, १९९२, पृष्ठ ११) ।"

समष्टि परिवार मे व्यक्ति सभी लोगों के प्रति उदार होता है । वह परिवार के प्रत्येक सदस्य की

इज्जत तहे दिल से करता है। अपने पराये का भेद नहीं करता है। सभी को सम दृष्टि से देखने की भावना होती है। सौतेली माँ को माँ का दर्जा देना अत्यन्त दुर्लभकारी कार्य होता है। व्यक्ति जब अपने पराये का भेद न करते हुए जीवन व्यतीत करता है, तब उसका जीवन ही श्रेयस्कर है। इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास "क्षमा करना जीजी" में वैसे ही परिवार के व्यक्ति को चित्रित करते हैं। विनीत अपने पिताजी के उदारतापूर्ण व्यवहार के बारे में सोचता है। सौतेली माँ होने के बावजूद, अनेक यातना सहने के बाद भी उन्हें माँ के दर्जे से कभी भी नीचे नहीं उतरने दिया। वह अपनी माँ की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य नही करते थे –"उन्होने अपनी सौतेली माँ को भी माँ ही माना था, और माँ की किसी भी इच्छा का विरोध करने की वे कल्पना भी नहीं कर सक्ते थे, चाहे वह इच्छा अनुचित और क्रूरतापूर्ण ही क्यों न हो (कोहली, १९९५, पृष्ठ ३०)।"

इस प्रकार व्यापक हृदय वाले हों तो परिवार मे खुशहाली का वातावरण ही बना रहता है। कभी कभी लोग समाज के डर के कारण भी बडे बुजुर्गो की सेवा करते हैं। समष्टि परिवार में लोक-लाज की भावना व्याप्त रहती है, जिससे व्यक्ति अपने आपको पृथक नहीं कर सकता है। माँ-बाप की सेवा करने का भाव स्वर्गीय आनन्द का रूप बन चुका है। बहुएँ सास-ससुर की सेवा केवल दिखावे के लिए करना चाहती हैं। इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली की कहानी "उत्तराधिकार" मे श्रीमती सलूजा श्रीमती सक्सेना से अपनी सफाई पेश करते हुए कहती है –"वे तो आज घर से बाहर ही निकलना नहीं चाहती थी। पिताजी को पीछे से कुछेक हो गया तो लोग यही कहेंगे कि बहू-बेटा सैर सपाटा कर रहे थे, पीछे से बुढ्ढा तडपता-तडपता मर गया। बेटे को तो कोई कुछ नहीं कहेगा - बेटा तो अपना खून होता है। लोग बदनाम तो बहू को ही करेंगे न (कोहली, १९९२, पृष्ठ २४७)।"

समष्टि परिवार के कुछेक सदस्य अनेक षड् यन्त्र भी रचते रहते हैं। एक व्यक्ति की आय पर सभी अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं, जिससे परिवार के बाकी सदस्य आलसी हो जाते हैं। एक व्यक्ति दिन भर खटता रहे और उसकी आय पर सभी व्यक्ति ऐशोआराम करना चाहते हैं। इस प्रकार उसकी आय पर अधिकार ही जमा लेते हैं। ऐसे ही विघटनकारी व्यक्तियों के कारण समष्टि परिवार टूट रहे हैं। समष्टि परिवार में प्रत्येक व्यक्ति को समान रूपसे परिश्रम करना चाहिए, तभी यह भवन टिक सकता है, अन्यथा यह भवन ढह जाने की सम्भावना है। इसी सन्दर्भको नरेन्द्र कोहली के उपन्यास "तोडो कारा तोडो" में विश्वनाथ और भुवनेश्वरी काली काका की करतूतों के बारे मे कहते हैं - "मेरी सारी आय पर काली काका का अधिकार है। वे परिवार के मुखिया हैं और मैं इस संयुक्त परिवार का एक सदस्य।...मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है कि मुझे अपनी आय उन्हें देनी पडती है। चिन्ता इस बात की है कि न तो उनकी अपनी कोई आय है, न उनके पुत्रों की (कोहली, १९९२, पृष्ठ ६३)।"

सम्पत्ति लोलुपता

समष्टि परिवार में लोग एक दूसरे को लूटने और खसोटने पर ही तुले होते हैं। कमाऊ व्यक्ति पर सब की नजर गडी होती है। कभी-कभी तो परिवार के लोग ही उनसे ईर्ष्या करने लगते हैं। उनकी सम्पति को हडपने की भी कोशिश करते हैं। इस प्रकार के जमीन व जायदाद के सम्बन्ध में भी अनेक षड्यन्त्र रचे जाते हैं, जो परिवार को विषाक्त बना देता है। ऐसे में जीना भी दूभर हो जाता है। सम्पत्ति के लफडे से बचने के लिए नरेन्द्र कोहली का उपन्यास "तोडो कारा तोडो" के पत्र विश्वनाथ और भुवनेश्वरी अपनी जायदाद को बचाने के लिए चिन्तित हैं। इस प्रकार के षड्यन्त्रों से बचने के लिए सम्पत्ति अपने पुत्रों के नाम से खरीदते हैं। "मैंने सोचा कि यदि मैं सम्पत्ति बिलेह

के नाम पर खरीद लूँ तो वे इस पर अपना अधिकार नहीं जमा पाएंगे । समझ लो कि इसे काली काका की लूटपाट से बचाने के लिए ही बिलेह के नाम से खरीदा है । समष्टि परिवार में इस प्रकार के कलह से बचने के लिए व्यक्ति को व्यक्ति का सहारा लेना पडता है (कोहली, १९९२, पृष्ठ ६४) ।"

सौहार्द्रता :

स्थान की कमियों के कारण एवम् आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने के कारण व्यक्ति व्यष्टि की ओर उन्मुख हो रहा है । व्यक्ति परिवार में परिवर्तित होने के बाद भी उनमें भाईचारे की भावना वैसी ही रहनी चाहिए जो पहले विद्यमान थी । उन्हें एक दूसरे की सहायता के लिए तत्पर रहना तथा मानवीयता के गुणों को उजागर करना चाहिए । वह कहीं भी रह ले, उसे अपनी मानवीयता नहीं छोडनी चाहिए । इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली अपनी कहानी "घर मे एक मौत" में आत्मीयता की बात करते हुए कहते हैं – "हमारा ताउजी का और चाचा का घर साथ-साथ ही है । किसी भी घर मे कोई काम परे तो एक दूसरे की सहायता के लिए उसी समय पहुँचा जा सकता है (कोहली, १९९५, पृष्ठ ४९) ।"

विभाजन किसी भी प्रकार से श्रेयस्कर नहीं है । विभाजन मनुष्य को सागर से विलग कर बूँद के रूप में निर्मित कर देता है । जीवन के महासागर में सागर ही लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है । बूँद प्रत्येक आयाम मे गौण ही होती है । इस तथ्य को नरेन्द्र कोहली अपने उपन्यास "महासमर" "धर्म" में युधिष्ठिर को समष्टि की महत्ता और विभाजन से होनेवाली कठिनाइयों की चर्चा करते हुए पितामह कहते हैं–"मुझे कभी कोई विभाजन प्रिय नहीं रहा । विभाजन से अहंकारी जीव का जन्म होता है और समग्रता मे ब्रह्म के दर्शन होते हैं (कोहली, २०००, पृष्ठ ३३६) ।" समष्टि परिवार की बात ही निराली होती है । वहाँ शिष्टाचार की भावना भरमार रूप में पायी जाती है । इज्जत और सम्मान तथा प्रेम का ब्रह्माण्ड ही पाया जाता है । बडों का आदेश और छोटों का मान और प्यार संरक्षित रहता है । शिष्टता और आचार विचार का संयोग पाया जाता है । इसी सन्दर्भ को नरेन्द्र कोहली की कहानी "सीमा के आर पार" मे दृष्टिगत किया गया है । इस कहानी की नायिका अपने आगामी सुखी परिवार की योजना बनाती है –"वहाँ मै होऊंगी और मेरे पति होंगे । मेरे सास ससुर होंगे, देवर ननदें होंगी, जेठ-जेठानियां होंगी । उस भरेपुरे घर मे बडे-छोटे का लिहाज होगा । व्यवहार मे शिष्टता होगी । बडे की बात को आदेश के समान अपनी इच्छा के विरुद्ध भी माना जाएगा (कोहली, १९९१, पृष्ठ २१८) ।"

आज की आधुनिक नारी समष्टि परिवार की खूबियों को समझने लगेंगी तो पारिवारिक कलह मिट जाएंगे । फिर से जीवन में खुशियाली का पदार्पण होने लगेगा । समष्टि परिवार मे शिष्टता, आचार, विचार, सम्मान, इज्जत आदि की भरमार होती है । वहाँ पर ज्यादातर स्नेह का भण्डार ही पाया जाता है । जीवन की समग्रता समष्टि परिवार में ही निहित है ।

प्रस्तुत आलेख में चित्रित समस्याए

नरेन्द्र कोहली द्वारा रचित रचनाओं को आधार मानकर प्रस्तुत आलेख में एकाकी परक जीवन की समस्या को उजागर किया गया है । प्रेम का उत्स जो निष्क्रिय हो चुका है, उसे सक्रिय करना नितान्त जरूरी है । यह आज के समाज की अभूतपूर्व मांग भी है । अबला नारी, बृद्ध व्यक्ति, विधवा नारी, मासूम बच्चे के जीवन यापन की समस्या को उजागर किया गया है, जिसका समाधान प्रस्तुत लेख के माध्यम से चित्रित है । व्यक्ति कुण्ठाग्रस्त हो, द्वन्द्व में रहकर उजाले की किरण की आशा करता है । बुजुर्ग समाज का बोझ नहीं, जीवन का आदर्श हैं । जीवन की यथार्थता

को स्वीकार करते हुए आदर्शपरक जीवन की माँग करना ही मुख्य ध्येय है ।

शैक्षणिक महत्व

जीवन जीने के तरीके को एक नयाँ आयाम देते हुए अनेक पहलुओं से जोडा जा सकता है । जीवन के विविध आयामों का अध्ययन किया जा सकता है । समष्टि परिवार में निहित समस्याओं को चित्रित करते हुए व्यष्टि परिवार की बहुलता पर गौर किया जा सकता है । सामञ्जस्यता की हद तक तथा उसकी सीमा परिसीमा पर भी अध्ययन किया जा सकता है । इस सम्बन्ध में गम्भीर और गहन अध्ययन की आवश्यकता है । जीवन में एक दूसरे की कद्र करना, इज्जत करना प्रत्येक व्यक्ति के मान सम्मान की रक्षा करते हुए जीवन यापन करना ही प्रस्तुत आलेख का मूल उद्देश्य है ।

प्रासंगिक तर्क-वितर्क

समष्टि परिवार वास्तव में सुखदायक है अथवा दुःखदायक ? प्रस्तुत प्रसंग की चर्चा करें तो प्रत्येक पहलू में उसकी अच्छाइयाँ निहित है । बुराइयों को नजरअन्दाज करते हुए आगे बढना ही श्रेयस्कर जीवन की माँग है । समष्टि परिवार कमजोर और निःसहाय व्यक्तिको सहारा तो देता है परन्तु उसके दुष्परिणाम भी हैं । दुष्परिणाम की ओर ध्यान दें तो वह व्यक्तिको आलसी और पंगु भी बना देता है । एक दूसरे पर आधिपत्य जमाना तथा सम्पत्ति हडपना जैसे दुष्परिणाम हमारे सामने मौजूद हैं । ऐसे में व्यक्ति कुण्ठाग्रस्त जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो जाता है । परिवार के मुखिया को सतर्कतापूर्वक, सचेत तथा आत्मीयता का सहारा लेना चाहिए ।

निष्कर्ष

पारिवारिक कलह केवल प्रेम से मिटाया जा सकता है । एक समझदार व्यक्ति इसकी खूबियों को बखूबी समझता है । इन कृतियों में समस्याओं का सामाधान निहित है । समस्या जीवन की संगिनी है । ईर्ष्या, द्वेष से केवल कलह ही उत्पन्न हो सकता है । हम सब एक दूसरे के पूरक हैं । समष्टि में ईश्वर का बास है । बेसहारों को सहारा प्रदान करता है । कमजोर व्यक्तिको बलिष्ठ बनाने में अपना योगदान देता है । बडे-बुर्जुगों की छत्रछाया में पले बच्चों का चरित्र निर्माण होता है । स्वस्थ समाज की स्थापना होती है ।

सन्दर्भ सामग्री

१. कोहली कार्तिकेय (२००० ई.). नरेन्द्र कोहली के विषय में - क्रिएटिभ बुक कम्पनी, नई दिल्ली

२. कोहली, नरेन्द्र (२००० ई.). महासमर - अधिकार, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

३. कोहली, नरेन्द्र (१९९१ ई.).समग्र कहानी भाग-१. सीमा के आरपार. नई दिल्ली, पराग प्रकाशन.

४. कोहली, नरेन्द्र (१९९२ ई.). तोडो कारा तोडो - निर्माण, दिल्ली, किताब घर.

५. कोहली, नरेन्द्र (१९९२ ई.).समग्र कहानी भाग-२. उत्तराधिकार. नई दिल्ली, पराग प्रकाशन.

६. कोहली, नरेन्द्र (१९९५ ई.).क्षमा करना जीजी. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ.

७. कोहली, नरेन्द्र (१९९५ ई.). समग्र कहानी भाग- २. घर में एक मौत. नई दिल्ली, पराग प्रकाशन.

८. कोहली, नरेन्द्र (१९९८ ई.).समग्र व्यंग्य- न्याय अन्याय. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

९. कोहली, नरेन्द्र (२००० ई.).महासमर- अधिकार. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

१०. कोहली, नरेन्द्र (२००० ई.). महासमर- कर्म. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

११. कोहली, नरेन्द्र (२००० ई.). महासमर- घर्म. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

१२. कोहली, नरेन्द्र (२००० ई.). महासमर - बंधन, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन.

१३. दास, श्याम सुन्दर संपा. (१९९७ ई.). हिन्दी शब्दसागर- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी